दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

Mentorship Program
Mukherjee Nagar

टेस्ट-7

(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

DTVF
OPT-23 **HL-2307**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Payal Gwalwanshi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): [redacted]

ई-मेल पता (E-mail address): [redacted]

टेस्ट न. एवं दिनांक (Test No. & Date): 07 / 03 August 2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	4	5	8	1	7

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) राम नाम के पटंतरै, देबे कौं कुछ नाहिं।
क्या ले गुरु संतोषिए, हौंस रही मन माहिं॥

संदर्भ – प्रस्तुत दोहा भक्ति की संतकाव्यधारा के महान कवि 'कबीर' की 'कबीर ग्रंथावली' के 'गुरू के अंग' से लिया गया है। जिसका संकलन श्याम सुंदरदास ने किया है।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों में गुरू के महत्व को दर्शाया गया है।

भावार्थ – प्रस्तुत दोहे में कबीर कहते हैं कि रामनाम के रटने में कोई लाभ नहीं है। इससे किसी दान के भी काबिल नहीं रहोगे। गुरू की भक्ति करिये, इससे मन को संतोष की प्राप्ति होगी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भाव सौन्दर्य - (1) कबीर द्वारा गुरु के महत्व को दर्शाया गया है जिस पर नाथ परम्परा और वैष्णव परम्परा का प्रभाव है।

(2) सगुण भक्ति के स्थान पर गुरु भक्ति को महत्व।

शिल्प सौन्दर्य -

(1) भाषा - सधुक्कड़ी, संधा भाषा
(2) काव्यरूप - दोहा छंद
(3) अलंकार - अर्थालंकार

प्रासंगिकता - वर्तमान दौर में भी गुरु-गुरु के महत्व को स्थापित करने में सहायक है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) न मिटै भवसंकट, दुर्घट है तप, तीरथ जन्म अनेक अटो।
कलि में न बिराग, न ज्ञान कहूँ, सब लागत फोकट झूँठ जटो।
नट ज्यों जनि पेट-कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटो।
तुलसी जो सदा सुख चाहिय तौ, रसना निसिबासर राम रटो।।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्ति की शाखा के महान कवि तुलसीदास की रचना कवितावली के उत्तरकाण्ड से ली गई है।

प्रसंग - तुलसीदास ने कलयुग की समस्याओं को उजागर कर रामराज्य की स्थापना का आग्रह किया गया है।

भावार्थ - तुलसीदास कहते हैं कि इस युग में कई समस्याएँ हैं जिनका समाधान तीरथ करने से संभव नहीं है। न ही इस युग में वैराग्य है, न ज्ञान है, सब कुछ झूठा और फीका है। तुलसी दास कहते हैं यदि सुख चाहिये तो दिन-रात राम का नाम रटो आपका उद्धार हो जायेगा।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भाव सौन्दर्य

(1) तुलसीदास द्वारा कलयुग की सामाजिक-आर्थिक समस्याओं पर विचार किया गया है।
(2) रामराज्य की स्थापना का आह्वान है।
(3) राम भक्ति के लाभ बताये गये है।

शिल्प सौन्दर्य

(1) भाषा - अवधी
(2) तुकबंदी - ' अटो, जटो, ठटो, रटो
(3) छंद - चौपाई, दोहा
अलंकार - सदा सुख चाहिय तौ
↓
अनुप्रास अलंकार

प्रासंगिकता - वर्तमान में भी यही समस्याएं विद्यमान है अतः रामराज्य की स्थापना की आज प्रासंगिक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) चुराता न्याय जो, रण को बुलाता भी वही है,
युधिष्ठिर! स्वत्व की अन्वेषणा पातक नहीं है।
नरक उनके लिए, जो पाप को स्वीकारते हैं;
न उनके हेतु जो रण में उसे ललकारते हैं।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिककाल के महान प्रगतिवादी कवि 'रामधारी सिंह दिनकर' की कविता कुरुक्षेत्र से ली गई है।

प्रसंग - दिनकर द्वारा युद्ध करने की अनिवार्यता को बता रहे है क्योंकि यदि कोई अन्यायिक युद्ध के लिये ललकारे तो युद्ध अपरिहार्य है।

भावार्थ - दिनकर, भीष्म पितामह द्वारा अपने दर्शन को निरूपित करते है कि, जो अन्यायी होता है वह युद्ध को बुलाता है, ऐसे समय में युद्ध करना ही उचित है। जो पाप को स्वीकारते है वो व्यक्ति नरक के भागी होते है। परन्तु जो युद्ध की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

ललकार को स्वीकार कर स्वत्व की रक्षा करते हैं वो नैतिक होते हैं। न्याय की स्थापना करते हैं।

भाव सौन्दर्य

1) रामधारी सिंह दिनकर द्वारा प्रगतिवादी दर्शन का प्रभाव
2) न्याय की स्थापना हेतु युद्ध की अपरिहार्यता का निरूपण
3) निर्णय, परिस्थिति के अनुसार लिये जाते हैं वही नैतिक है।

शिल्प सौन्दर्य

1) भाषा - अभिधा, सीधी-सरल
2) शैली - अभिधात्मक, इतिवृत्तात्मक
3) तत्समी शब्द जैसे- अन्वेषणा, स्वत्व

प्रासंगिकता - वर्तमान में भी न्याय की स्थापना हेतु, व्यक्तिगत हित के स्थान पर सार्वजनिक हित की महत्ता।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) नहिं परागु, नहिं मधुर मधु नहिं विकासु इहिं काल।
अली, कली ही सौं बंध्यौं, आगै कौन हवाल।।

संदर्भ - प्रस्तुत दोहा हिन्दी साहित्य के रीतिकालीन कवि 'बिहारी' की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' से लिया गया है।

प्रसंग - रीतिकालीन श्रृंगार का प्रस्तुतीकरण प्राकृतिक उपादानों की सहायता से किया गया है।

भावार्थ - बिहारी, साम्राज्य की अराजकता पर विचार करते हुए कहते हैं कि इस काल में न प्रेम है न मधुर मधु (मिठास) है और न ही विकास के कोई प्रमाण दिखाई देते हैं। सभी लोग, विषय वासना में बंधे हुए हैं ऐसे में इस राज्य की बागडोर कौन सम्भालेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भाव सौन्दर्य -

(1) बिहारी द्वारा केवल दरबारी मौज मस्ती ही नहीं, राज्य के विकास पर भी विचार किया गया है।

(2) विषय वासना से ग्रस्त प्रेम के स्थान पर पवित्र प्रेम की स्थापना का महत्व स्थापित किया गया है।

शिल्प सौन्दर्य

(1) भाषा - ब्रजभाषा - परागु, विकासु

(2) प्रतीक - प्राकृतिक उपादान
जैसे- मधुप, परागु

(3) छंद - दोहा

(4) अलंकार - अनुप्रास - मधुर मधु

प्रासंगिकता - वर्तमान युग भी मीडियाआदि के माध्यम से वास्तविक प्रेम के महत्व को भूल गया है। अतः यह दोहा प्रासंगिक है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त-तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार,
चमकतीं दूर ताराएँ ज्यों हो कहीं पार।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक काल के छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की महान रचना राम की शक्ति पूजा से ली गई है।

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश में मर्यादा पुरुषोत्तम राम की शारीरिक विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

भावार्थ - निराला, राम की शारीरिक संरचना की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि जैसे ही राम ने अपने कमलरूपी चरण पृथ्वी पर रखे, धरती धन्य हो गई। उनके सिर पर जटाओं का मुकुट है, उनकी लटाएँ चारों ओर फैली हुई हैं। उनके बाहु बहुत बलशाली हैं

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उनका वक्ष (सीना) चौड़ा है। जिसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे अंधकार पर्वत से उतर कर जगमगा रहा हो।

भाव सौन्दर्य –

(1) निराला द्वारा राम की शारीरिक वर्णन से ज्ञात होता है कि स्वयं निराला ही राम रूप में हैं।

(2) निराला के राम, किसी राजा के राजकुमार नहीं अपितु साधारण मनुष्य हैं।

शिल्प सौन्दर्य –

(1) भाषा - सीधी - सरल, खड़ी बोली
(2) शैली - अभिधात्मक, रचनात्मक
(3) छायावादी प्रभाव के कारण - भावात्मक शैली
(4) छंद - लम्बी कविता
(5) प्रतीक - नवनीत चरण, जटा मुकुट
(6) बिम्बयोजना भी सुन्दर है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'उपालंभ के क्षेत्र में जो अद्‌भुत सफलता सूर को मिली है, शेष कवि उसके आसपास भी नहीं पहुँच सके हैं।'-क्या सूर का काव्य इस कथन की पुष्टि करता है? विश्लेषणात्मक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'बिहारी' की बहुज्ञता पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) शक्ति-काव्य के प्रतिमान के रूप में 'राम की शक्ति-पूजा' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) कबीर की भक्ति-भावना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य के महान समीक्षक हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी पुस्तक 'कबीर' में कबीर को मूलतः भक्त माना है साथ ही समाजसुधारक, कवि, संत आदि विशेषताएं घलुए मात्र है।

कबीर की भक्ति भावना

कबीर की भक्ति भावना परम्परागत भक्तिपद्धति का अंधानुकरण नहीं है अपितु निजी अनुभवों से विकसित नई भक्ति पद्धति है।

कबीर मूलतः नाथ परम्परा के हठयोग से प्रभावित थे परन्तु सहस्रार चक्र तक पहुँचने के बाद भी सब सामान्य होने के कारण उनका योग से मोह भंग हो गया और तब उन्होंने भक्ति की राह पकड़ी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

"गगना पवना दोनों बिनसे
कहा गया जोग तुम्हारा।"

कबीर ने मुख्यतः निर्गुण ईश्वर की भक्ति की है। आचार्य शुक्ल ने इसे पैगम्बरी खुदावाद कहा परन्तु इस पर शंकराचार्य के अद्वैतवाद का प्रभाव था।

"निरगुन राम जपहुँ रे भाई"

साथ ही सगुण ईश्वर पर आक्षेप भी किया गया है।

"दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना,
राम नाम का मरम है आना।"

कहीं कहीं कबीर द्वारा निर्गुण राम का सगुणीकरण कर दिया गया है।

'हरि जननी मैं बालक तोरा'

"हरी मेरा पिउ मैं हरि की बहुरिया"

इस प्रकार, कबीर की भक्ति में राम के निर्गुण और सगुण रूप का संश्लेषण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कर दिया गया है।

कबीर की भक्ति भावना, दक्षिण के रामानंद से प्राप्त हुई थी। चूँकि कबीर नाथ परम्परा से संबंधित थे इसलिये उन्हें सरल भक्ति पसंद नहीं आयी इसलिये इन्होंने इसमें हठयोग की अक्खड़ता और धमायिकता का समावेशन किया।

"कबीर यह घर प्रेम का, खाला का घर नाहीं,
सीस उतारे हाथ गही, सो घर पैसे नाहीं।"

इसके साथ ही कबीर को साधनात्मक रहस्यवाद से आंशिक सूफी भक्ति के भावनात्मक रहस्यवाद ने भी प्रभावित किया जो उनकी भक्ति भावना में स्पष्ट है-

"तलफै बिनु बालम मोरा जिया,
दिन नहीं चैन रात नहीं निंदिया, तलफ तलफ के भोर किया।"

वैष्णव परम्परा के रामानंद से भक्ति ज्ञान लेने के कारण कबीर की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भक्ति भावना में वैष्णव वेदांती दर्शन का भी प्रभाव है, जिसमें गुरु का सम्मान, प्रपत्तिमार्ग, अहिंसा का भाव आदि है।

गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाय
बलिहारी गुरु आपने जो गोविन्द दियो बताये
(गुरु भावना)

"बकरी पाती खात है ताकि काढ़ि खाल
जे नर बकरी खात हैं तिनका कौन हवाल।"
(अहिंसा भाव)

"मेरा मुझमें कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर
तेरा तुझको सौंपता क्या लागत है मोर"
(प्रपत्तिवाद)

इस प्रकार कबीर की भक्ति भावना बहुआयामी है जिसपर सभी दर्शनों का प्रभाव है। इसलिये हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है

"कबीर की भक्ति उस बना के समान है जो योग की भूमि में भक्ति के बीज गिरने से उपजी है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) कामायनी के महाकाव्यत्व पर विचार कीजिये। 15

'कामायनी' आधुनिक काल के छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद की सर्वश्रेष्ठ रचना है जिसे हिन्दी पद्य साहित्य की अंतिम महाकाव्यात्मक काव्य का दर्जा प्राप्त है।

कामायनी का महाकाव्यत्व

किसी भी रचना को महाकाव्य का दर्जा देने की कुछ शर्तें होती हैं जैसे-

(1) वह रचना अपने समाज के सभी वर्गों सभी समस्याओं का शामिल करती हो।
(2) पात्रों की संख्या अधिक हो।
(3) किसी महान उद्देश्य की स्थापना करती हो।
(4) शृंगार, वीर, करुणा जैसे रसों का समावेश हो
(5) जिसका नायक वीर पुरुष हो।
(6) सर्ग, खण्डों की संख्या अधिक हो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उपरोक्त शर्तों के आधार पर कामायनी महाकाव्य नहीं लगता है। परन्तु महाकाव्यत्व की आधुनिक शर्तें जैसे - उदात्त कथा, उदात्त चरित्र, उदात्त कार्य, उदात्त वाचक, उदात्त समाधान आदि के आधार पर तुलना की जाये तो कामायनी एक महान महाकाव्य लगता है।

उदात्त कथा - कामायनी की कथा मुख्यतः बाहरी विषय वासनाओं से मुक्त हो, स्वच्छंद और पवित्र प्रेम की स्थापना पर आधारित है।

जिसमें श्रद्धा नामक नायिका, मनु को सामाजिक विषय वासना से दूर ले जाती है।

उदात्त चरित्र - कामायनी के स्त्री पात्र अपने-अपने क्षेत्र में महान चरित्र है। जैसे- श्रद्धा, पवित्र एकनिष्ठ प्रेम की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उपासक, वही इड़ा अपने राज्य को सम्भालने हेतु प्रतिबद्ध है। मनु भी समय के अनुसार सही रास्ते में आ जाता है।

उदात्त कार्य - कामायनी में संसार को प्रकृति के वास्तविक मूल्यों से परिचय कराया गया है। यहाँ विच्छिन्नता नहीं अपितु विचारों में संतुलन होना अपरिहार्य है।

श्रद्धा द्वारा भी काव्य के अंत में मनु को बाहरी आडम्बरों, मोह माया से दूर स्व की पहचान हेतु ले जाया गया है।

उदात्त समाधान - कामायनी में सामाजिक समस्याओं के समाधान को प्रस्तुत किया गया है जो इसे वर्तमान युग हेतु भी प्रासंगिक बनाते है।

उपरोक्त आधारों पर चरीक्षण करने पर 'कामायनी' महाकाव्य के सभी आधारों की पूर्ति करती है। अतः इसे महाकाव्य का दर्जा देना सही कदम है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निराला अपने समय की आवश्यकतानुसार प्रसंग का चयन, प्रसंग का विस्तार तथा प्रसंग की व्याख्या करते हैं। क्या निराला की यह विशेषता राम की शक्तिपूजा में भी दृष्टिगत होती है? विवेचन करें। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य की छायावादी धारा के महान कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला द्वारा राम की शक्तिपूजा की रचना वर्ष 1936 में की गई थी।

यह वही समय है जब देश में स्वाधीनता आन्दोलन चल रहा था। गांधीजी द्वारा स्वाधीनता हेतु सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया गया परन्तु सफल नहीं हो पाने पर निराशा है। ब्रिटिश शासन की साधन सम्पन्नता राष्ट्रवादियों के विश्वास को कम करती है।

कुछ आलोचकों द्वारा निराला पर आक्षेप है कि उन्होंने समाज से कटी हुई छायावाद से प्रभावित होकर राम की शक्ति पूजा की रचना की है परन्तु वास्तव में यह स्वाधीनता आन्दोलन को केन्द्र में रखकर अपने समय की आवश्यकतानुसार लिखित कविता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जिस तरह राम की शक्ति पूजा में रावण के साथ शक्ति है उसी प्रकार ब्रिटिश शासन भी आधुनिक हथियारों की शक्ति से सम्पन्न है -

'अन्याय जिधर है उधर है शक्ति'

स्वाधीनता आन्दोलन में जो भूमिका गांधीजी की है वही राम की शक्तिपूजा में राम की। गांधीजी भी राष्ट्र की स्वतंत्रता चाहते हैं और राम, सीता की मुक्ति।

'मुक्ति प्रिया की हो न सकी'

सविनय अवज्ञा आन्दोलन में हार के बाद जिस तरह गांधीजी निराशा, संशय, निरर्थकता बोध से ग्रसित है उसी तरह, राम भी माँ दुर्गा द्वारा अंतिम इन्दीवर चुरा लेना के कारण दुःखी, निराश हो जाता है और रावण की शक्ति सम्पन्नता से भयभीत होता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रावण पशुबद्ध होकर

" धिक्कार जीवन को, जो करता आया शोध"

परन्तु जाम्बवान जैसे परिपक्व सेनापति के समझाने पर जिस तरह राम पुन: खड़े होते हैं उसी प्रकार गांधीजी भी पुन: स्वतंत्रता आंदोलन में लग जाते हैं।

"रावण पशुबद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त तो निश्चय तुम सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त।"

इस प्रकार राम अपने कार्य को पूरा करने एक ओज देने को तैयार हैं वही गांधीजी 'करो या मरो' का नारा देकर। शक्ति की मौलिक कल्पना करते हैं।

आराधान का दृढ़ आराधान से दो उत्तर
तुम वरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर।
होगी विजय होगी विजय हे रघुनंदन

इस प्रकार निराला अपने समय की आवश्यकतानुसार ही शक्ति की मौलिक कल्पना के महत्व को उजागर करते हैं जिसका स्वाधीनता आंदोलन में भी उतना ही महत्व है जितना राम के संघर्ष में।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) कबीर के काव्य में उपस्थित रहस्यवाद के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डालिये। 20

कबीर अपने काल के महान, समाजसुधारक, संत, कवि, और भक्त माने जाते हैं। इस बहुआयामी व्यक्तित्व के साथ ही इन पर उपनिषद, वैष्णव परम्परा, सूफीवाद, सिद्ध नाथ परम्परा सभी का समान प्रभाव दिखाई देता है।

कबीर के काव्य में उपस्थित रहस्यवाद

कबीर मूलत: जन्म से ही सिद्ध नाथ परम्परा में पले बढ़े थे। इसलिये उनपर नाथ परम्परा के साधनात्मक रहस्यवाद का अधिक प्रभाव था।

" जोई सोई पिण्डे, सो ही ब्रह्माण्डे "

इसी कारण इन पर हठयोग के कारण अंतर्मुखी रहस्यवाद का भी प्रभाव दिखाई देता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"जल में कुंभ, कुंभ में जल है
बाहर भीतर पानी,
फूटा कुंभ, जल, जलहिं समाना,
यह तथ कहौ ज्ञानी।"

परन्तु कबीर पर भावनात्मक रहस्यवाद का भी प्रभाव था इसलिये इन्होंने खुदा को जगत के कण-कण में भी माना है।

"लाली मेरे लाल की जित देखूँ तित लाल,
लाली देखन मैं चला, मैं भी हो गया लाल।"

कबीर हठयोग से गहरे रूप से प्रभावित थे। इसलिये इन्होंने कुण्डलिनी और महाकुण्डलिनी को एक करने का प्रयास किया था परन्तु इतने प्रयास के बाद भी सब सामान्य होने के कारण उनका साधनात्मक रहस्यवाद से विश्वास उठ गया

"जगना पवना दोनों बिनसै
कहा गया जोग तुम्हारा।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसके पश्चात, कबीर ने सूफी परम्परा से भावनात्मक रहस्यवाद को ग्रहण किया और इसी दिशा में कार्य किया जिसका प्रभाव उनकी भक्ति भावना में स्पष्ट है—

तलफै बिनु बालम मोर जिया,
दिन नहीं चैन रात नहीं निंदिया,
तलफ-तलफ कै भोर किया।"

कबीर मुख्यतः प्रेम की भावना को अपने काव्य में अधिक महत्व देते हैं। और शंकर के अद्वैतवाद से प्रभावित होकर ब्रह्म और भक्त की एकता को मान्यता देते हैं।

जो बिछुडे हैं पियारे से फिर दर बदर,
हमारा यार है हममें, हमन को बेकरारी
क्या।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इस प्रकार कबीर द्वारा, साधनात्मक रहस्यवाद से भावनात्मक रहस्यवाद की ओर प्रस्थान किया गया परन्तु इसके साथ ही । इनमें नाथ परम्परा की अक्खड़ता, प्रमाणिकता, आत्मविश्वास विद्यमान था जो भावनात्मक रहस्यवाद में भी प्रदर्शित होता है।

हम घर जारी आपनो, लिये मुराड़ा हाथ,
अब घर जारौं तासु का, जो चलै हमारे साथ।

भावनात्मक प्रेम की राह में भी साधना को महत्व देते हैं।

"कबीरा यह घर प्रेम का, खाला का घर नाहीं,
सिस उतारे हाथ करि, जो घर पैसे नाहीं।"

अतः कबीर का रहस्यवाद नाथपरम्परा के साधनात्मक रहस्यवाद और सूफी परम्परा के भावनात्मक रहस्यवाद का मिश्रण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) गोस्वामी तुलसीदास की 'रामराज्य की परिकल्पना' पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भक्तिकाल के रामभक्ति काव्य धारा के महान कवि तुलसीदास द्वारा रामविषयक महान रचनाएँ की गई है। जिनमें रामचरितमानस नामक महाकाव्य और कवितावली नामक खण्डकाव्य प्रसिद्ध है।

तुलसीदास की रामराज्य की परिकल्पना

तुलसीदास द्वारा कवितावली खण्डकाव्य के उत्तरकाण्ड में रामराज्य की परिकल्पना की गई है। इस रचना का मुख्य उद्देश्य राज्य की सामाजिक-आर्थिक समस्याओं जैसे- भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, धार्मिक अंधविश्वास, शोषण, विषय वासना की ओर प्रवृत्ति आदि पर दुःख जताते हुए, रामराज्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

की स्थापना का आवधान किया गया है।

"खेती न किसान को,
भिखारी को न भीख भली
बनिक को बनिज न,
चाकर को चाकरी,
जीविका विहीन लोग सिद्यमान सोच बस
कहै एक सो एक कहा करी कहा जाए,
देख तुलसी रावण हा हा कार करी।"

तुलसी दास कहते है कि जिस राज्य में किसानो, भिखारियों, व्यापारियों को समय अनुसार कार्य प्राप्त न हो, जीवन व्यतीत करने के साधन उपलब्ध न हो उस राज्य का विकास कैसे हो सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इन सभी समस्याओं के समाधान हेतु भगवान राम जैसे महान पुरुष को अवतरित होना पड़ेगा।

जिस तरह राम के राज्य में सभी लोग सुख शान्ति का जीवन व्यतीत करते थे। इसी शान्तियुक्त राज्य की स्थापना ही, कलयुग की ~~समस्याएं हेतु~~ समस्याओं का समाधान है।

इसी कारण तुलसी ने <u>गरीबनेवाज</u> की उपाधि दी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'प्रगतिवादी जीवनमूल्यों में आस्था रखते हुए भी मुक्तिबोध 'लकीर के फकीर' नहीं हैं और अनुभवजन्य यथार्थ पर अधिक यकीन रखते हैं।' ब्रह्मराक्षस कविता के संदर्भ में इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रगतिवादी विचारधारा के महान कवि गजानन माधव मुक्तिबोध की कविता 'ब्रह्मराक्षस' प्रगतिवादी मूल्यों को धारण करती है परन्तु यह शत प्रतिशत सही नहीं है। इसमें उनके जीवन के अनुभव भी यथार्थवाद का चित्रण करते हैं।

(1) साधनात्मक रहस्यवाद का दर्शन

मुक्तिबोध में मुख्यतः योग परम्परा का प्रभाव था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(2) मार्क्सवादी विचार धारा से प्रेरित

(3) पारिवारिक जिम्मेदारियों से अनुभवी।

इस प्रकार, मुक्तिबोध, द्वारा समस्याओं से अनुभव लेकर ब्रह्मराक्षस की रचना की गई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(क) मंगलु बिंदु सुरंगु, मुखु ससि केसरि-आड़ गुरु।
इक नारी लहि संगु, रसमम किय लोचन-जगत॥

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश ~~कबीर~~ बिहारी के '~~कुछ के अंश~~' से लिया गया है। बिहारी सतसई

प्रसंग - इसमें ~~कबीर द्वारा~~ बिहारी द्वारा रीतिकालीन विचारधारा का प्रस्तुतीकरण किया गया है।

भावार्थ - बिहारी अपनी रसवादी भावना से प्रेरित होकर कहते हैं कि मांगल समय में नारी के मुख में चन्द्रमा के समान केसर रंग बहुत सुन्दर लगता है। साथ ही नारी की जालब्धी आँखें भी प्रभावशाली है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावपक्ष

1) बिहारी द्वारा रीतिकालीन परम्परा का अनुसरण

2) शृंगार रस के संयोग का वर्णन

3) ब्रजभाषा

4) अर्थालंकार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरवा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश सूफी काव्यधारा के महान कवि जायसी की पद्मावत रचना से ली गई है।

प्रसंग - इसमें 'नागमति विरह खण्ड' में नागमती के रत्नसेन के बिना विरह की अवस्था को बारहमासा द्वारा दिखाया गया है।

व्याख्या - नागमती कहती है कि भादों का महीना आया गया है, रात अंधकारयुक्त है। साँप, बिच्छू जैसे पानी चारों ओर घूम रहे हैं। और मैं अकेली हूँ, मन से मेरा हृदय काँप रहा है। बिजली चमक रही है, जो विरह को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

और बढ़ाती है। मेघ भी वर्षा कर रहे हैं। साथ ही मेरी आँखों से भी आँसु बह रहे हैं। जैसे ओरी से पानी बहता है।

भाव सौंदर्य

(1) नागमती के विरह का वर्णन, पवित्रता, एकनिष्ठता को दर्शाता है।

(2) बारहमासा रूढ़ि का प्रयोग है।

(3) प्राकृतिक उपादानों का प्रयोग सराहनीय है।
जैसे- बिजली, बादल

(4) ग्रामीण भाषा का प्रयोग
'ओरइ नैन चुवहिं जसि ओरी'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) सोइ रावन कहुँ बनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई।।
अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा।।
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन। बोला बचन पाइ अनुसासन।।
जौं कृपाल पूँछिहु मोहिं बाता। मति अनुरूप कहौं हित ताता।।
जो आपन चाहै कल्याना। सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना।।
सो पर नारि लिलार गोसाईं। तजउ चउथि के चंद कि नाईं।।
चौदह भुवन एक पति होई। भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई।।
गुन सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहइ न कोऊ।।
दोहा: काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत।।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश रामभक्ति काव्य धारा के महान कवि तुलसीदास की रामचरितमानस रचना से लिया गया है।

प्रसंग - प्रस्तुत दृश्य, विभीषण द्वारा रावण से राम भक्ति के आग्रह का है।

भावार्थ - तुलसी द्वारा राम भक्ति का महत्व दिखाया गया है। विभिषण दरबार में आना बड़े भाई रावण के चरण छूकर, अपने आसन में बैठ जाना है, और रावण से कहता है कि यदि आप अपने राज्य का

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कल्याण चाहते हैं तो राम का भजन करे। राम चारों लोक के देवता हैं। उनके गुनगान से हमारे राज्य का उद्धार अवश्य होगा।

भाव सौन्दर्य

(1) राम भक्ति का महत्व दर्शाया गया है।
(2) रावण से राम भक्ति करने की अपील की गई है।

शिल्प सौन्दर्य

(1) भाषा - अवधी
(2) छन्द - चौपाई + दोहा
(3) अलंकार - अनुप्रास अलंकार

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हाथ जिसके तू लगा,
पैर सर रखकर वो पीछे को भगा
औरत की जानिब मैदान यह छोड़कर,
तबले को टट्टू जैसे तोड़कर,
शाहों, राजों, अमीरों का रहा प्यारा
तभी साधारणों से तू रहा न्यारा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावादी कवि, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कुकुरमुत्ता कविता की है।

प्रसंग – कुकुरमुत्ता की साधारण लोगों में महत्व को उजागर किया गया है और गुलाब की अभिजात्यता को दिखाया गया है।

आशय – निराला कहते हैं कि गुलाब का फूल जिसके हाथ लगता है वह उसे दुख पहुँचाता है क्योंकि उसमें काँटे होते हैं। भले ही गुलाब महान राजाओं, अमीरों को प्यारा हो परन्तु साधारण लोगों के बीच उसका कोई महत्व नहीं है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाव पक्ष

1) गुलाब की अभिजात्यता को दिखाया गया है जो भारत जैसे विकासशील देश के लिये अनुकूल नहीं है।

2) साधारण, आम आदमी की मांग ही, लोकतंत्र की स्थापना करती है।

शिल्प

1) सीधी - सरल भाषा
2) मार्क्सवादी चिंतन
3) प्रतीकों और बिम्बों का प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मेरे हार गए सब जाने-माने कलावंत,
सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर,
कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका।
अब यह असाध्य वीणा ही ख्यात हो गई।
पर मेरा अब भी है विश्वास
कृच्छ-तप वज्रकीर्ति का व्यर्थ नहीं था।
वीणा बोलेगी अवश्य, पर तभी।
इसे जब सच्चा स्वर-सिद्ध गोद में लेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ – प्रयोगवादी कवि अज्ञेय की असाध्यवीणा कविता से लिया गया है।

प्रसंग – सभी की वीणा बजाने की असमर्थतता को दर्शाया गया है।

भावार्थ – राजा कहता है कि मेरे दरबार के सभी ज्ञानी पुरुष इस वीणा को बजाने में असमर्थ रहे है। सबकी विद्या किसी काम नहीं आई। परन्तु मेरा विश्वास है कि एक दिन यह वीणा ~~अवश्य~~ जरूर बजेगी जब कोई बजाने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वाला सच्चा, पवित्र हृदय वाला वीणावादक मिल जायेगा। वह वीणा भी मधुर स्वर देगी।

भाव पक्ष

1) प्रयोगवादी विचारधारा का प्रभाव

2) सीधी-सरल भाषा

3) व्यनुप्रास अलंकार

4) सच्चा-स्वर-सिद्ध गोद

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'कामायनी मानव-मन एवं मानवता के विकास की कहानी है।' इस मत के संदर्भ में कामायनी की काव्य-वस्तु का अनुशीलन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बिहारी की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जायसी और कबीर के रहस्यवाद की तुलना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'सूर का भ्रमरगीत नागर-संस्कृति के बरक्श लोक-संस्कृति की प्रतिष्ठा करता है।' इस कथन पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नागमती के विरह-वर्णन को मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण कहना कहाँ तक उचित है? अपना मत दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'मुक्तिबोध परंपराभंजक अनगढ़ काव्यभाषा के कवि हैं।' 'ब्रह्मराक्षस' कविता के आधार पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) "पीड़ित, शोषित, अपमानित जनमानस के दुःख से जितना सरोकार कबीर का है, उतना भक्तिकाल के किसी अन्य कवि का नहीं।" इस कथन की मीमांसा कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर का व्यक्तित्व बहुआयामी माना जाता है। इसी आधार पर उन्हें, समाजसुधारक, भक्त, कवि, संत की संज्ञाएँ दी जाती है।

समाजसुधारक के रूप में कबीर ने समाज के पीड़ित, शोषित, अपमानित जनमानस के दुःख का सरोकार किया है। जो इस कारण से है।

कारण - कबीर स्वयं गरीब परिवार में जन्मे थे, जातिगत भेदभाव, वंचित जीवन का उन्हें अनुभव था इसी कारण उन्होंने इन वर्गों के प्रति संवेदना जाहिर की है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

" जाति-पाति पुछे नहीं कोई,
हरि को भजै सो हरि का होई।"

प्रस्तुत दोहे के माध्यम से जातिगत भेदभाव से पीड़ित दलित समाज के प्रति संवेदना व्यक्त की गई है।

" पाथर पूजे हरि मिले तो मैं पूजू पहार,
ताके तो चाकी भली, पीस खाए संसार।"

प्रस्तुत दोहों के माध्यम से धार्मिक अंधविश्वास पर प्रश्न उठाया गया है। और समाज के अपमानित वर्ग का पक्ष लिया गया है। जिसके रूप में चाकी का प्रयोग है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

" साईं के सब जीव है,
कीरी कुंजर दोय।"

अर्थात् ईश्वर के सामने सभी समान है। समतामूलक समाज की स्थापना ही कबीर का मुख्य उद्देश्य था।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भारत-भारती में निहित नवजागरण-चेतना पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'भारत-भारती' नामक कविता की रचना द्विवेदी युग के महान कवि मैथिलीशरण गुप्त जी की गई थी।

भारत-भारती को मुख्यतः तीन खण्डों में विभाजित किया गया है।

(1) अतीत खण्ड – जिसमें भारत की प्राचीन संस्कृति की प्रशंसा की गई है। अर्थात प्राचीन मूल्यों की पुनः स्थापना की मांग की गई है।

यह भारतेंदु के भारत दुर्दशा नाटक के समान विषय को समाहित करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्तमान खण्ड – इसमें वर्तमान की समस्यायों जैसे अशिक्षा, गरीबी, अंधविश्वास पर दुःख जाहिर किया गया है।

इसी कारण गुप्त जी नवजागरण चेतना से युक्त कविता लिखना चाहते थे।

भारत-भारती की तुलना मुख्यतः हाली के मुसद्दस से की जाती है जो राष्ट्रीय चेतना से युक्त कविता थी

नवजागरण चेतना

(1) अतः वर्तमान की समस्यायों के समाधान हेतु दो उपाय है जो नवजागरण की प्रक्रिया हेतु आवश्यक है –

दृष्टि The Vision 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(1) ब्रिटिश शासन की ज्ञान-विज्ञान-यंत्रों, मशीनीकरण की नीति को अपनाया जाये।

(2) अपनी प्राचीन गौरवमयी भारतीय संस्कृति की पुनः स्थापना की जाये।

अतः उपर्युक्त उपायों द्वारा ही नवजागरण के माध्यम से भविष्य में एक सुशासन की स्थापना संभव है।

दृष्टि The Vision 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'जनसाधारण की सहज भावनाओं, समस्याओं से लेकर सामान्य जनजीवन तक की अभिव्यक्ति करती हुई नागार्जुन की कविता विशिष्ट व उदात्त की उपेक्षा व साधारण के प्रति प्रतिबद्धता की मिशाल पेश करती है।' इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागार्जुन को मुख्यतः
जनसाधारण के 'कवि' की संज्ञा दी जाती है। उनके द्वारा न तो छायावाद का और नही प्रगतिवाद का पक्ष लिया गया।

उनके द्वारा नई आधुनिक विचारधारा की स्थापना की गई है।

उनकी तीन कविताएँ मुख्यतः जनसाधारण की सहज भावना, और जनजीवन की अभिव्यक्ति की है।

(1) अकाल और उसके बाद

इस कविता में नागार्जुन के लोक-जीवन के प्रति संवेदनशीलता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को दर्शाया गया है। किस प्रकार, गरीबी, अभाव से ग्रस्त परिवार, कुछ दानों के घर में आने से खुश हो जाता है-

धुँआ उठा घर से, कई दिनों
के बाद,
कौए ने भी खुजलाई पाखें, कई दिनों
के बाद,
खाने के दाने आए घर में,
कई दिनों के बाद,
चमक उठी घर-भर की आँखें,
कई दिनों के बाद।

उपर्युक्त कविता के माध्यम से स्पष्ट होता है कि नागार्जुन मुख्यतः जनसाधारण के समस्याओं के प्रति संवेदनशील थे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(7) हरिजनगाथा

हरिजनगाथा कविता में भी नागार्जुन की यही संवेदना केन्द्र में रही है।

समाज के सबसे वंचित वर्ग के शोषण, कानून तक अल्प पहुंच, अशिक्षा की ओर समाज का ध्यान खींचती यह कविता,

नागार्जुन की विशिष्ट समाज के प्रति दृष्टि और साधारण समाज के प्रति प्रतिबद्धता को उजागर करती है।

चलो आज, मैं ले चलूं तुम्हें
चमारों की बस्ती में'।

Copyright – Drishti The Vision Foundation